4

क्रियात्मक अनुसंधान तथा शिक्षा के क्षेत्र में इसकी सार्थकता

कुसुमलता*

प्रस्तावना

दुनिया भर में स्कूली शिक्षा में होने वाले शोधों में तेज़ी से वृद्धि हुई है। इसके चलते सीखने-सिखाने की प्रवृत्ति को समझने में काफ़ी मदद मिली है। इसी कड़ी में क्रियात्मक शोध एक नई शोध विधा के रूप में उभरकर सामने आया है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शैक्षिक कार्य-संपादन में संलग्न शिक्षाविदों से लेकर शिक्षकों तक को अपनी समझ के साथ-साथ अपने प्रयासों में व्यवस्थित तरीके से सुधार लाने का अवसर प्राप्त हुआ है। क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक की समस्याओं के समाधान के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है। इसके अंतर्गत शिक्षण की समस्याओं का वैज्ञानिक विधि से समाधान खोजा जाता है जिससे शिक्षण में वांछित सुधार लाया जा सके।

क्रियात्मक अनुसंधान एक व्यापक तथा मिश्रित शब्द है। यह अंग्रेज़ी के 'एक्शन रिसर्च' के अनुवाद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।'एक्शन' शब्द दो शब्दों — एक्ट (act) तथा ऑन (on) से मिलकर बना है। इसी प्रकार 'रिसर्च' शब्द भी दो शब्दों — री (re) तथा सर्च (search) से मिलकर बना है।

यह एक नवीन संकल्पना है। क्रियात्मक अनुसंधानों का अभिप्राय उन अनुसंधानों से है जिनका प्रमुख उद्देश्य शिक्षण संस्थानों की व्यावहारिक समस्याओं का हल खोजना है। किसी भी व्यवस्था के भली प्रकार संचालन के लिए उसके सदस्य ही उत्तरदायी होते हैं। उनके समक्ष समस्याएँ आती हैं, उसकी गहनता को कार्यकर्ता ही भली प्रकार समझ सकता है। अतः कार्यकर्ता को कार्यप्रणाली की समस्या के चयन करने तथा उसके समाधान ढूँढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, तभी वह अपने कार्य कौशल का विकास कर सकता है। कार्यकर्ता द्वारा स्वयं की कार्यप्रणाली की समस्या का चयन करने, उसका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने एवं समाधान ढूँढ़कर वर्तमान क्रिया में सुधार करने की प्रक्रिया को क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान, विद्यालयों की कार्यपद्धति में सुधार एवं विकास करने का एक सबल साधन है। इसके माध्यम से शिक्षक अपनी कक्षा तथा विद्यालय की समस्याएँ सुलझाने का प्रयास करता है।

* *शिक्षक-शिक्षार्थी* (बी. एड.), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

आज शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान हो रहे हैं जिनका उद्देश्य शिक्षा को उत्तम बनाना और शिक्षा संबंधी समस्याओं को दूर करना है। क्रियात्मक अनुसंधान, शिक्षा में अनुसंधान की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है।

अनुसंधान का एक रूप शैक्षिक अनुसंधान भी है। शैक्षिक परिस्थितियों में किए जाने वाले अनुसंधान को शैक्षिक अनुसंधान कहते हैं। जिनका ध्येय छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का विकास करना तथा उन्हें अधिक योग्य, सबल एवं सक्षम बनाना होता है। शैक्षिक अनुसंधान को दो भागों में बाँटा जाता है —

(i) मौलिक/आधारभूत/मूल अनुसंधान
(ii) क्रियात्मक अनुसंधान

शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान एक कारगर साधन के रूप में प्रचलित है। इसकी शुरुआत सामाजिक मुद्दों पर शोध कर रहे कर्ट लेविन (1946) से मानी जाती है। क्रियात्मक अनुसंधान को शिक्षकों ने स्वयं की क्षमता संवर्द्धन के प्रभावी साधन के रूप में देखा और स्वीकार किया है। क्रियात्मक शोध का एक लाभ यह भी है कि इसके द्वारा शिक्षक अपने परिवेश के अनुरूप शिक्षण विधि का निर्माण कर सकते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा

क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है जिसका प्रयोग अध्यापक अपनी शिक्षा में सुधार के लिए करते हैं।

कार्टर वी. गुड के अनुसार, *"क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों एवं प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों तथा कार्यों में गुणात्मक सुधार लाने के लिए किया जाने वाला अनुसंधान है।"*

जोहन इलियट ने क्रियात्मक शोध की व्यापक परिभाषा करते हुए कहा है — *"क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक अपनी कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं का आकलन करता है तथा बेहतर कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं की खोज करता है। ऐसा करके न केवल वह कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर बनाता है, अपितु इस संबंध में अपने स्तर के नए सिद्धांत भी बना रहा होता है। यही सिद्धांत प्रभावी होने पर पुराने सिद्धांतों का स्थान ले लेते हैं।"*

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना हेतु निम्नांकित सोपान विकसित किए गए हैं जिनका प्रयोग क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना का प्रारूप बनाने के लिए किया जा सकता है —

(i) क्रियानुसंधान परियोजना का शीर्षक;
(ii) परियोजना के मुख्य एवं गौण उद्देश्य;
(iii) परियोजना कार्य की प्रणाली;
(iv) परियोजना कार्य-प्रणाली की क्रियान्वयन योजना;
(v) परियोजना की मूल्यांकन व्यवस्था;
(vi) परियोजना के लिए बजट-प्रारूप;
(vii) विद्यालय का नाम, कक्षा एवं वर्ग तथा छात्रों की संख्या, जहाँ अनुसंधान किया जाना है;
(viii) विभिन्न विषयों में शिक्षकों की संख्या;
(ix) विद्यालय में परियोजना कार्य के लिए उपलब्ध सुविधाएँ;
(x) परियोजना के संभावित क्रियान्वयन (implications)

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य

क्रियात्मक शोध अपनी कार्य प्रणाली को बेहतर बनाने और उसमें सुधार करने की सतत प्रक्रिया है।

October 2016.indd 22 8/16/2017 3:36:54 PM

इस प्रक्रिया का उद्देश्य शिक्षण कार्य के दौरान आ रही किसी समस्या का समाधान करना व अपनी कार्य प्रणाली को सुदृढ़ करना है। इसके माध्यम से शिक्षक उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जो उन्हें समस्या के रूप में दिखते हैं और जिनका वे समाधान चाहते हैं। शिक्षकों के द्वारा किए जाने वाले क्रियात्मक शोध के विविध उद्देश्य होते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं —

(i) शिक्षण को बेहतर और प्रभावी बनाने के लिए।

(ii) शिक्षण-अधिगम विधियों को बेहतर बनाने के लिए।

(iii) विषय-विशेष से संबंधित समस्या के समाधान के लिए।

क्रियात्मक अनुसंधान का महत्त्व

शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए क्रियात्मक अनुसंधान किए जाते हैं। इससे कक्षा या विद्यालय की दैनिक गतिविधियों, क्रियाकलापों और समस्याओं का अध्ययन एवं निराकरण करने में सहायता मिलती है। यह विद्यालय एवं कक्षा की कार्य-परिस्थितियों में सुधार लाता है। छात्रों, शिक्षकों तथा प्रशासकों में वैज्ञानिक अभिवृत्तियों का विकास करता है। क्रियात्मक अनुसंधान छात्रों के निष्पादन स्तरों और आकांक्षा स्तरों में वृद्धि करता है। इसका उद्देश्य कक्षा एवं विद्यालय की कार्य-प्रणाली एवं स्थिति में प्रगति, सुधार एवं गुणात्मक परिवर्तन लाना होता है। यह विद्यालय के शिक्षकों आदि को अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाता है और उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करता है। क्रियात्मक अनुसंधान के अनुप्रयोग के माध्यम से छात्रों की योग्यता व उपलब्धि में वृद्धि होती होती है। इसकी सहायता से अधिगम अधिकतम और प्रभावशाली बनाने के लिए नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकते हैं। प्रोजेक्ट, किंडरगार्टन आदि विधियाँ क्रियात्मक अनुसंधान की ही देन हैं।

अतः क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य विद्यालय की प्रगति तथा विकास करना होता है। यह कक्षा और विद्यालयों में प्रतिदिन उठने वाली समस्याओं का समाधान है। यह शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने या तेज़ी से विकास करने का एक प्रयास है जिसमें समस्या का हल अपेक्षाकृत शीघ्र प्राप्त होता है।

ग्रंथ सूची

सिंघल, अनुपम और एस.पी. कुलश्रेष्ठ. 2014 . *शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार*. अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

October 2016.indd 23 8/16/2017 3:36:54 PM